अध्याय - 1

"खंडकाव्य: सैध्दान्तिक विवेचन"

अध्याय - 1

खंडकाव्य: सैध्दांतिक विवेचन

काव्य मानव मनकी भावाभिव्यक्ति का रुप है। कविमन के भाव जब पद्यरुप में शब्द और अर्थरुप सहित बध्द होते हैं तब उसे काव्य कहा जाता है। अग्निपुराण में काव्य का स्वरुप इस तरह स्पष्ट किया गया हैं "जिस काव्यसमुह में अलंकार स्पष्ट रुप से प्रदर्शित हो तथा जो गुणों से युक्त और दोषों से मुक्त हों उसे काव्य कहते हैं।"। लेकिन भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य शब्द का जिस व्यापक अर्थ में प्रयोग किया गया है उस अर्थ में हिंदी मे प्रयुक्त न करके उसे संस्कृतके काव्य शब्दको कुछ अंशोंतक हिंदी के 'साहित्य' शब्द का समानार्थी माना है। इसमें न केवल गद्य और पद्य रचनाओं का समावेश होता हैं। बल्कि नाटक तथा नाटकादि सभी रचनाएँ इसके अंतर्गत ली जाती हैं।

काव्य का वर्गीकरण

भारतीय एवं पाश्चात्य आचार्योंने काव्य का वर्गीकरण विभिन्न आधारोंपर किया हैं। संस्कृत के प्रमुख आचार्योंमेंसे भामह ने प्रतिपाद्य वस्तु तथा बंध के आधारपर काव्यका वर्गीकरण करनेका प्रयास किया है।"वामन ने छंद और बंध के आधारपर 1) अनिबध्द तथा 2) निबध्द ये रुप माने है।"2 दंडी ने मुक्तक, कुलक, कोश, संघात ये भेद माने तथा इस तरह के पद्यों को सर्गबध्द काव्य का अंशरुप कहा है। रुद्रट ने कथावस्तु और स्वरुप विधान के आधारपर 1) महत प्रबंध काव्य तथा 2) लघु प्रबंध काव्य दो भेद किये। संस्कृत के उपर्युक्त आचार्योका काव्यसंबधी वर्गीकरण देखानेपर आचार्य विश्वनाथ का वर्गीकरण इस दृष्टिसे विशेष सफल लगता है। उन्होंने सर्वप्रथम 'साहित्यदर्पण' ग्रंथ में खंडकाव्य शब्द का प्रयोग किया और इंद्रियोंको प्रभावित करनेके आधारपर "काव्य के 'श्रव्य' और "दृश्य" ये दो भेद किये। फिर उन्होंने श्रव्य काव्य के दो भेद पद्यकाव्य और गद्यकाव्य करनेके उपरांत पद्यकाव्य के मुक्तक, युग्मक, सान्दानितक, कलापक और कुलक तथा सर्गबध्द महाकाव्य काव्य और खंडकाव्य ये भेद किये।"3 उपर्युक्त भेदोंमेंसे प्रथम पाँच अनिबध्द या मुक्तक कोटि के श्रेणी में और अंतिम तीन

निबध्द या प्रबंधकाव्य की कोटि में आते हैं। इसप्रकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार प्रबंधकाव्य के तीन भेद हुए ।)महाकाव्य 2) काव्य 3) खंडकाव्य और इस दृष्टिसे खंडकाव्य की अवधारणा का प्रारंभ यही से होता हैं। संस्कृत के विद्वानोंके मतोंके आधारपर हम इस निष्कर्षपर पहुँचते हैं कि दण्डीद्वारा प्रयुक्त संघात तथा रुद्रट द्वारा उल्लिखित खंडकाव्य के ही पर्याय रुप में प्रचलित हैं।

खंडकाव्यः शब्द का हिंदी में स्वरुपः

खंडकाव्य ' शब्द का प्रयोग हिंदी में खडीबोली की काव्यरचना के साथ प्रचलित और प्रसिध्द हो गया। द्विवेदी युग के कुछ कवियों ने महत्वपूर्ण विषयों पर काव्यरचना करके उसके खंडकाव्य होने का भी उल्लेख कर दिया। लेकिन द्विवेदीयुगीन रचनाकारों और आलोचकों ने प्रबंधकाव्य काव्य के केवल दो भेदोंको मान लिया। ।) महाकाव्य तथा 2) खंडकाव्य इन आलोचकोंने प्रायः आचार्य विश्वनाथ द्वारा संशोधित काव्य नामक भेद को लुप्त कर दिया। इसके बाद "आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने पहलीबार प्रबंधकाव्य का एक और रुप एकार्य काव्य को मानते हुए प्रबंधकाव्य के तीन भेदोंको मान्यता दी- महाकाव्य, एकार्थकाव्य और खंडकाव्य।"4

हिंदी के महान आलोचक "आचार्य गुलाबराय ने अपनी किताब"काव्य के रुप" में साहित्य के लिए समानार्थी शब्द 'काव्य' का प्रयोग किया और उसके दृश्य और श्रव्य इसतरह दो भेद किए। फिर उन्होंने श्रव्य काव्योंके दो भेद मुक्तक और प्रबंध को मान्यता दी. तथा प्रबंध के अंतर्गत महाकाव्य और खंडकाव्य इसतरह काव्य के दो भेद स्वीकार कियें। उपर्युक्त विवेचन के आधारपर हम कह सकते हैं कि आचार्य गुलाबराय के मतानुसार प्रबंधकाव्य के केवल दो ही भेद होते हैं- खंडकाव्य और महाकाव्य। गुलाबराजीने काव्य के इन दो भेदोंके व्यतिरिक्त किसी तीसरे भेद की कल्पना नहीं की।"5

"डॉ. भगीरथ मिश्र ने काव्य के भेद पर विचार करते हुए प्रबंधकाव्य के अंतर्गत खंडकाव्य पर विचार किया हैं। उन्होंने अपनी किताब "हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास" में प्रबंधकाव्य के केवल दो भेद महाकाव्य और खंडकाव्य ही माने है।"6 इसके अलावा मिश्रजीने अपनी दूसरी किताब काव्यशास्त्र में प्रबंधकाव्य का वर्गीकरण करते समय पद्य काव्य की तीन कोटियाँ मानी हैं- ।) प्रबंध 2) निबंध 3) निर्बन्ध इसके पश्चात उन्होंने प्रबंधकाव्य के दो भेद स्पष्ट किये ।) महाप्रबंध 2) खडप्रबंध या खंडकाव्य डॉ. मिश्रजीने खंडकाव्य पर विचार करते

हुए उनके दो भेद किये पहले प्रकारके खंडकाव्य को उन्होंने संघात अथवा एकार्थ खंडकाव्य की संज्ञा से निरुपित किया जिसमें एकही प्रकारके छंद में घटना या दृश्य का वर्णन किया जाता हैं"। . डॉ. भगीरथ मिश्रजीने खंडकाव्य के दूसरे प्रकारको अनेकार्थ खंडकाव्य नाम दिया जिसके अंतर्गत अनेक प्रकारके छंदों में विविध भाषों के साथ जीवन के एक अंश का चित्रण होता हैं। महाकाव्य के समान इसका विस्तार नहीं होता।

खंडकाव्य शब्द तथा उसके भेदों संबंधी उपर्युक्त विद्वानोंके मतोंको देखते हुए हम कह सकते हैं कि प्राय: हिंदी के सभी आलोचकों ने प्रबंधकाव्य के दो भेद माने हैं। महाकाव्य और खंडकाव्य। उपर्युक्त आचार्योंमेंसे केवल विश्वनाथप्रसाद मिश्रने बंध के आधारपर तीन भेद किये। ।1) महाकाव्य 2) खण्डकाव्य 3) एकार्थकाव्य। एकार्थकाव्य नामक तीसरे भेदको मिश्रजी द्वारा मान्यता देनेका आधार भी कविराज विश्वनाथ द्वारा काव्य नामक तीसरे मध्यवर्ती प्रबंध भेद का उल्लेख किया जाता हैं।

खंडकाव्य: संस्कृत परिभाषाएँ

हिंदी साहित्य की आधुनिक कालीन बहुतसी विधाओंका जन्म संस्कृत साहित्य से हुआ हैं। संस्कृत काव्यशास्त्र का अवलोकन करनेपर यह दिखाई देता है कि संस्कृत के आचार्यों ने खंडकाव्य का विवेचन विस्तार के साथ नहीं किया है। इसके स्वरुप की कल्पना सर्वप्रथम रुद्रट के मस्तिष्क में आयी जब उन्होंने कथा आख्यायिका आदि की तरह प्रबंधकाव्य के महत् एवं लघु दो रुप बनायें। लेकिन खंडकाव्य नाम और उसके निश्चित स्वरुप की कल्पना का सारा श्रेय आचार्य विश्वनाथ को हैं तभी से अनेक विद्वानोंने खंडकाव्य का स्वरुप तथा उसकी विशेषता को ध्यान में रखकर उसे परिभाषाबध्द बनानेका प्रयास किया हैं। उनमेंसे कुछ परिभाषाएँ निम्नानुसार हैं--

आचार्य विश्वनाथ- आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' में प्रबंधकाव्य के इस भेद को स्वीकार करते हुए उसके लिए खंडकाव्य शब्द का प्रयोग किया तथा भारतीय काव्यशास्त्र में उन्होंने सर्वप्रथम खंडकाव्य की परिभाषा की जो इसप्रकार है --

" भाषा विभाषा निमात्काव्य सर्गसमुत्थितम् ।
एकार्थ प्रवणै: पथै सन्धि सामग्यवर्जितम्।
खंडकाव्यं भवेत्काव्यसैकदेशानुसारि च।" 7

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

खंडकाव्य संबंधी उपर्युक्त परिभाषा का विवेचन करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया है कि, भाषा या उपभाषा में सर्गबध्द तथा एककथा का निरुपण करनेवाला पद्यग्रंथ जिसमे समस्त संधियाँ न हो- काव्य कहा जाता है और काव्य के एक अंश का अनुसरण करनेवाला खंडकाव्य हैं। उन्होंने आगे लिखा है कि खंडकाव्य वह है जो किसी घटनाविशेष को लेकर रचा गया हो।

आचार्य विश्वनाथ के अलावा रुद्रट , भामह, आनंदवर्दन आदि आचार्योंने भी खंडकाव्य के स्वरुप की चर्चा की हैं। फिर भी समस्त संस्कृत काव्यशास्त्र को परखनेपर यह दिखाई देता है कि संस्कृत आचार्योंने महाकाव्य को अधिक महत्व देकर उसका ही सर्वांगपूर्ण विवेचन प्रस्तुत करनेका प्रयास किया हैं, जिससे खंडकाव्य संबंधी उनकी दृष्टि कम महत्व की रही हैं।

हिंदी विद्वानोंद्वारा परिभाषाएँ -

संस्कृत आचार्योके समान हिंदी के आचार्योंने भी खंडकाव्य को अपने अपने दृष्टियोंसे उसके स्वरुप को देखकर परिभाषाबध्द बनानेकी कोशिश की हैं-

1) डॉ. **भगीरथ मिश्र-** मिश्रजी के मतानुसार खंडकाव्य में कथावस्तु संपूर्ण न होकर उसका एक अंश ही होती हैं, जिसमें जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना या दृश्य का मार्मिक उद्‌घाटन होता है और अन्य प्रसंग संक्षेप में रहते हैं। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने 'हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास' इस ग्रंथमें खंडकाव्यकी परिभाषा इसप्रकार की हैं--"खंडकाव्य वह प्रबंधकाव्य हैं जिसमें किसी भी पुरुष के जीवन का कोई अंश ही वर्णित होता हैं पूरी जीवनगाथा नहीं इसमें महाकाव्य के सभी अंग न रहकर एकाध अंग ही रहते हैं।"8 मिश्रजी के मतानुसार खंडकाव्य में कथासंकलन आवश्यक होता हैं सर्गबध्दता नहीं। खंडकाव्य में वस्तुवर्णन, भाववर्णन एवं चरित्रचित्रण किया जाता है पर कथा विस्तार नहीं किया जाता।

2) डॉ. **गुलाबराय-** आचार्य गुलाबरायजीने खंडकाव्य में एक ही घटना को मुख्य मानकर उसमें जीवन के किसी एक पहलू की झाँकी को आवश्यक माना है। उन्होंने खंडकाव्य का लक्षण इसप्रकार दिया हैं- "खंडकाव्य में प्रबंधकाव्य सा तारतम्य तो रहता हैं किंतु महाकाव्य की अपेक्षा उसका क्षेत्र सीमित होता है। उसमे जीवन की वह अनेक रुपता नहीं रहती जो कि महाकाव्य में होती हैं।"9 गुलाबरायजीके मतानुसार खंडकाव्य का क्षेत्र महाकाव्य

की अपेक्षा सभी दृष्टियोंमें समान होता हैं लेकिन महाकाव्य के सभी तत्व लघुरुपमें स्वीकार किये जाते हैं।

3) **आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र**- मिश्रजीने खंडकाव्य के स्वरुप का निर्धारण करते हुए स्पष्ट किया हैं कि-"महाकाव्य के ही ढंगपर जिस काव्य की रचना होती हैं पर जिसमें पूर्ण जीवन ग्रहण न करके खडजीवन ही ग्रहण किया जाता हैं उसे खण्डकाव्य कहते हैं।"10 अपनी बात को स्पष्ट करते हुए उन्होंने बतलाया है कि यह खंडजीवन इसप्रकार व्यक्त किया जाता हैं जिससे वह प्रस्तुत रचना के रुप में स्वत: पूर्ण प्रतीत हो। खंडकाव्य का विस्तार भी थोडा होता हैं। एकार्थ काव्य की भाँति पूर्ण जीवन का कोई उद्दिष्ट पक्ष उसमें नहीं होता।

4) **बलदेव उपाध्याय**- उपाध्याय जी कविराज विश्वनाथ के 'काव्यस्य एक देशानुसारि' का व्यापक अर्थ लेते हुए खंडकाव्य को महाकाव्य का एकदेशानुसारि रुप मानते हैं उनकी स्पष्ट धारणा है कि " वह काव्य जो मात्रा में महाकाव्य से छोटा परन्तु गुणों मे उससे कथमपि शून्य न हो खंडकाव्य कहलाता हैं।" ।। उपाध्याय जी के उपर्युक्त परिभाषा के आधारपर यह स्पष्ट हो जाता हैं कि महाकाव्य और खंडकाव्य मे केवल मात्राभेद होता हैं गुणभेद नहीं।

5) **हिन्दी विश्व कोष**- " जो काव्य संपूर्ण लक्षण युक्त न हो, खण्डकाव्य हैं।"।2इस परिभाषा को देखनेपपर लगता है सपूर्ण लक्षण से क्या तात्पर्य हैं लगता है अभिप्राय महाकाव्य के ही संपूर्ण लक्षणों से हैं। इसप्रकार हिंदी विश्व कोष में भी खंडकाव्य की संज्ञा देने का संकेत हैं जिसमें महाकाव्य के सभी लक्षण न होकर केवल कुछ लक्षण हो।

खंडकाव्यसंबंधी उपर्युक्त परिभाषाओंकों देखनेपर यह स्पष्ट हो जाता है कि खंडकाव्य का मूल तत्व तो जीवन की किसी मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी घटनाका प्रभावपूर्ण शैली में उद्घाटन करना हैं। खंडकाव्य की प्रेरणा के मूल में अनुभूति को महत्वपूर्ण माना जाता हैं। जीवन के मर्मस्पर्शी खंड का बोधमात्र कवि के ह्दय में नहीं होता तो उसका समन्वित प्रभाव उसके ह्दयपर पडता हैं उसी वक्त प्रेरणा के बलपर जिस काव्य की रचना होती हैं वह खंडकाव्य कहलाता हैं। इस संदर्भ में डॉ. शकुंतला दुबे का यह कथन महत्वपूर्ण लगता है खंडकाव्य के खंड शब्द का यह अर्थ कदापि नहीं कि वह बिखरा हुआ अथवा किसी महाकाव्य का एक खंड हैं, प्रस्तुत यह खंड शब्द उस अनुभूति की ओर संकेत करता हैं, जिसमें जीवन अपने संपूर्ण रुप

में कवि को न प्रभावित कर आंशिक या खंडरुपमें प्रभावित करता हैं, महाकाव्य के अन्य सभी गुणों से वह युक्त नहीं होता'।"।3

खंडकाव्य: पाश्चात्य धारणाएँ-

पाश्चात्य काव्यशास्त्र में भी खंडकाव्य संबंधी थोडासा विवेचन किया गया है। काव्य का सैध्दांतिक रुपसे वर्गीकरण युनानी समीक्षा में सर्वप्रथम प्लेटो ने किया उन्होंने काव्य के प्रमुख तीन भेद माने ।) अनुकरणात्मक 2) प्रकथनात्मक 3) मिश्र/प्लेटो के बाद उसके शिष्य तथा प्रसिध्द काव्यशास्त्री अरस्तु ने भी कवि का व्यक्तित्व काव्य का विषय, काव्यका माध्यम, रीति आदि आधारोंको ग्रहण करके काव्यके विभिन्न भेद निर्धारित किए। अरस्तु ने व्यक्तित्व के आधारपर वीरकाव्य एवं व्यंग्यकाव्य इसतरह दो भेद किए जिसके विषय प्रमुख तथा यथार्थ से उत्कृष्ट मानवीजीवन का चित्रण करनेवाला काव्य तथा यथार्थ मानवजीवनका चित्रण करनेवाला काव्य और यथार्थ से निकृष्ट मानवजीवनका चित्रण करनेवाला काव्य इसतरह मान लिए। विषय के आधारपर भी अरस्तु ने पाँच काव्यभेदोंका उल्लेख किया ।)महाकाव्य 2) त्रासदी 3) कामदी 4) रौद्रस्त्रोत 5) संगीतकाव्य। रीति की दृष्टि से उन्होंने समाख्यान काव्य तथा दृश्यकाव्य इसतरह दो भेद किए। काव्य के माध्यम की दृष्टि से अरस्तुने पद्यकाव्य तथा गद्यकाव्य इसतरह दो भेद किये।

अरस्तु के उपर्युक्त काव्यभेद उनकी प्रखर प्रतिभा का द्योतक माना जाता है। उसके कालतक काव्य के इतनेही रुप युनान में विद्यमान थे। अरस्तु का काव्यप्रकारों यही विभाजन भारतीय काव्यशास्त्रों के काव्य विभाजन से बहुत मेल खाता हैं। अरस्तु के काव्य विभाजन में श्रव्य एवं दृश्य तथा प्रबंध एवं मुक्तक का परोक्ष संकेत है। मोटे तौरपर उन्होंने काव्य के दो वर्ग किये ।) समाख्यान काव्य 2) दृश्यकाव्य। समाख्यान काव्योंमे आख्यान की प्रमुखता रहती हैं इसका प्रमुख भेद है - महाकाव्य, समाख्यान काव्योंमें अरस्तु ने महाकाव्य को प्रमुख स्थान देकर उसका विस्तृत विश्लेषण किया हैं। उन्होंने महाकाव्य के अलावा क्षुद्र विषयोंपर अश्रित व्यंग्य उपहासयुक्त अवगीनि काव्य को भी इसके अंतर्गत स्वीकार कर लिया हैं। अरस्तु के मतानुसार महाकाव्य जीवन की काव्यानुकृति हैं कथानक पात्र, विचार, एव भाशा ये चार उनके मूल तत्व हैं'। युनानी काव्यशास्त्र में प्लेटो तथा अरस्तु ने और उसके बाद दूसरे यूनानी काव्यशास्त्रीयोंने महाकाव्य के अलावा उसके दूसरे लघुरुप की चर्चा नहीं की।"।4

युरोप के समीक्षकों ने भी काव्य का विभाजन व्यक्ति और संसार को अलग स्थान देकर किया हैं। इसके आधारपर उन्होंने काव्य के दो भेद किए ।) विषयीगत- जिसमें कवि की प्रधानता रहती हैं तथा 2) विषयगत- जिसमें कवि के अतिरिक्त ससार की प्रमुखता रहती हैं। विषयीप्रधान काव्य को 'प्रगीत' और विषयप्रधान काव्य को 'एपिक' कहा जाता हैं। विषयप्रधान काव्यका उन्होंने पुनः विभाजन किया जिसमें आख्यान काव्य एवं रुपककाव्य आ जाते है। आख्यान काव्यों के अंतर्गत महाकाव्य का स्थान हैं। उसके भेदों में विकासकाव्य और कलाकाव्य आ जाते हैं। पाश्चात्य आलोचकों ने खंडकाव्य का अलग विभाग नहीं किया लेकिन उन्होंने ऐसे कुछ काव्यरुपोंकी सृष्टि की जो खंडकाव्य के निकट आनेवाले हैं। पाश्चात्य काव्यशास्त्र में आख्यान काव्य नामक काव्यरुप हैं जो भारतीय खंडकाव्य विद्या के निकट आनेवाले है। इसतरह पाश्चात्य काव्यशास्त्र में खंडकाव्य संबंधी थोडासा विवेचन दिखाई देता है।

खंडकाव्य: लक्षण

खंडकाव्य संबंधी उपर्युक्त भारतीय तथा पाश्चात्य मतोंसे एक बात विशेष लक्षित होती हैं कि इसमें जीवन के एकही पक्षका चित्रण होता हैं। जब जीवन का विस्तृत दृष्टिकोण से निरीक्षण और वर्णन होता हैं तब 'महाकाव्य' जन्म लेता हैं। जहाँ जीवन का सीमित दृष्टिपथ से विश्लेषण वर्णन होता हैं वहाँ 'खडकाव्य' की सृष्टि होती हैं। लक्ष्य काव्योंके आधारपर ही तो लक्षणों का निर्धारण होता हैं। आधुनिक काल के लक्ष्य काव्य तो पुराने लक्ष्य काव्यों के रुप एवं भाव की दृष्टिसे बदले हुए हैं। इस बदलने परिवेश में उसके लक्षणो में भी थोडा बहुत परिवर्तन हो जाना स्वाभाविक हैं। आधुनिक काल से लेकर आजतक खडीबोली में हिंदी खंडकाव्य धारा निरतर प्रवाहित हो रही हैं। 'द्विवेदी युग से लेकर छायावाद एव छायावादोत्तर कालके खंडकाव्यो में कालोंचित विभिन्न काव्य प्रवृत्तियाँ दर्शित होती है। नवयुग में आकर यह काव्य रुप और भी सज गया और बदल गया उसकी विशेषताओं को ध्यान में रखनेपर खडकाव्य के निम्नलिखित लक्षण प्रमुखतया ठहरते हैं। ।) खंडकाव्य एक प्रबंधकाव्य है जिसमें जीवन के किसी मार्मिक पक्षका चित्रण सीमित दृष्टिकोण से होता है।

2) खंडकाव्य की कथावस्तु का चयन प्रख्यात, पौराणिक- अथवा इतिहासप्रसिध्द घटनाओ में करना चाहिए ऐसा बधन नही कल्पना से भी कथावस्तु का निर्माण किया जा सकता है।

3) खंडकाव्य के नायक के लिए धीरोदात्त , धीरोध्दत, धीरललित या धीरप्रशांत होना अनिवार्य नही है। किसी भी वर्ग का कैसा भी पात्र इसका नायक हो सकता हैं।

4) महाकाव्य के लक्षण संकुचित रुप में स्वीकार किये जाते हैं।

5) रुप और आकार में खंडकाव्य महाकाव्य से छोटा होता हैं।

6) काव्य में कथा संगठन अवश्य हो तथा उसमें एकान्विती होनी चाहिए।

7) खंडकाव्य अपने आपमें संपूर्ण हो तथा उसमें प्रभावान्विती हो।

8) खंडकाव्य में कमसे कम सात सर्ग होने चाहिए तथा प्रत्येक सर्गका पूर्वापार सबंध हो।

9) काव्य में छंदोबध्दता की आवश्यकता नहीं मुक्त छंद में भी काव्यरचना हो सकती हैं।

10) मंगलाचरण की खंडकाव्य मे कोई जरुरत नहीं हैं अगर हो तो ग्रंथके आरभमे बिलकुल सक्षिप्त होना चाहिए।

11) निर्वाहप्रवाहवर्णन ये खंडकाव्य की प्रमुख विशेषता है क्रिया व्यापार की गतिको निर्वाद रखने के लिए आवश्यक है संक्षिप्त ओजपूर्ण, परिस्थिति के अनुरुप, त्वरा, बुध्दिमूलक संवादोकी योजना की जाए।

12) खंडकाव्य का नामकरण वृत्त अथवा नायकके आधारपर करना चाहिए।

13) पुरुषार्थ की प्राप्ति ये खंडकाव्य का उद्देश्य हो सकता हैं किंतु इसके अतिरिक्त किसी उद्दीप्त भावको सामने रखकर मानव मनको उद्बोधित करना भी होता हैं।

खंडकाव्य के उपर्युक्त लक्षणोंको देखनेपर प्रमुखरुप से निम्न तत्व खंडकाव्य की दृष्टिसे अधिक महत्वपूर्ण ठहरते हैं।

1) **कथावस्तु-** खंडकाव्य की कथावस्तु का चयन प्रख्यात पौराणिक अथवा इतिहासप्रसिध्द घटनाओंसे करना चाहिए ऐसा बंधन नही। कथावस्तु का निर्माण कल्पना से भी किया जा सकता हैं। इसमें पूर्णजीवन का चित्रण न करके खंडजीवन ही ग्रहण किया जाता हैं, इसलिए खंडकाव्य में कथा संगठन आवश्यक माना गया हैं। खंडकाव्य की कथावस्तुमें प्रासगिक कथाओंका अभाव होता हैं। कथावस्तु का सौदर्य इसमें होता है कि वह क्षिप्रगति से बढती हुयी अपने उद्देश्य पर यथा संभव शीघ्र पहुँच जाय और मार्मिकता के साथ जीवन के विशिष्ट अंग का उद्घाटन करे। आधुनिक काल में प्रतिकात्मक खंडकाव्योंकी निर्मिती विपुल मात्रामे हो रही हैं इसीलिए खंडकाव्य का कवि किसी ऐतिहासिक पौराणिक पात्र या घटनाको लेकर आधुनिक समस्या या मानवी मनोविज्ञान को प्रकट करनेका प्रयास हो रहा है। उदा. 'युध्द और शांति की समस्या' को लेकर लिखा गया 'रामधारीसिंह दिनकरंजीका खंडकाव्य- 'कुरुक्षेत्र' मैथिलीशरण गुप्तजी के 'साकेत तथा 'पचवटी' आदि खंडकाव्य इसके उदाहरण हैं।

2) **पात्र-** पात्र या चरित्र खंडकाव्य का महत्वपूर्ण तत्व हैं। खंडकाव्य में एक से अधिक पात्र हो सकते है। जो पात्र प्रधान होता हैं तथा जिससे संबंधित कथावस्तु होती है उसे नायक कहा जाता है। महाकाव्य के समान धीरोदत्त गुणोंसे युक्त पात्र ही खंडकाव्य का नायक होना आवश्यक नहीं तो कोई भी पात्र इसका नायक बन सकता हैं। खंडकाव्य में कथावस्तु से अधिक पात्रोंके मनोवैज्ञानिक चरित्रचित्रण तथा उनके अंर्तद्वंद्व तथा संघर्षो को स्थान दिया जाता हैं। इसके लिए पौराणिक पात्र केवल प्रतीक रुप में लिये जाते हैं लेकिन उनका चित्रण आधुनिक युग के अनुसार किया जाता हैं। उदा 'रश्मिरथी,' शल्यवध', द्रौपदी, चक्रव्यूह आदि खंडकाव्य।

3) **उद्‌देश्य-** कोई काव्य निरुद्‌देश्य नहीं हो सकता। खंडकाव्य तो प्रबंधकाव्य का एक भेद है इस दृष्टिसे उसका भी अपना कोई उद्‌देश्य होता हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन पुरुषार्थोंकी प्राप्ति के अलावा किसी उद्‌दीप्त भावको सामने रखाकर मानव मनको उद्‌बोधित करना तथा पौराणिक प्रख्यात आख्यानों की मौलिक उद्‌भावनाओ के बल पर आधुनिक युगके नवीन परिवेश के अनुकुल रुप में प्रस्तुत करना भी होता हैं। उदा. धर्मवीर भारती की 'कनुप्रिया' अंधायुग । दिनकरजी की 'उर्वशी'। सुमित्रानंदन पत का 'लोकायतन' आदि।

इसप्रकार भारतीय काव्यशास्त्र में खंडकाव्य संबधी जिस धारणाओंको मान्यता दी है तथा खंडकाव्य संबंधी जो विश्लेषण-वर्गीकरण किया हैं उसके मूल में संस्कृत आचार्योंकी खंडकाव्यसंबंधी धारणाएँ मुख्य रही है। कविराज विश्वनाथद्वारा निर्दिष्ट खंडकाव्य का लक्षण ही हिंदी में उसके स्वरुप निर्धारण का मूल आधार हैं। सर्गबध्दता तथा सभी संधियों की योजना का आवश्यक न होना किसी एक अर्थ का उद्‌दिष्ट होना आदि जिन्हे विश्वनाथ ने काव्य का लक्षण माना।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

खंडकाव्य : वर्गीकरण

संस्कृत काव्यशास्त्र को परखने पर यह दिखाई देता हैं कि खंडकाव्य का विवेचन विश्लेषण वर्गीकरण संस्कृतके आचार्योंने नहीं किया हैं। हिंदी के आचार्यों का भी ध्यान समुचित रुपसे इस ओर नहीं गया लेकिन कतिपय आधुनिक आचार्योंने खंडकाव्य के वर्गीकरण को प्रस्तुत करनेका प्रयास किया हैं। हिंदी के आचार्योंमिंसे सर्वप्रथम डॉ. भगीरथ ने 'काव्यशास्त्र' नामक अपने प्रसिध्द ग्रंथ में छंदयोजना के आधारपर खंडकाव्य के दो वर्ग किये 'एकार्थ' और 'अनेकार्थ' काव्य। जिस खंडकाव्य में आद्यंत एकही छंद का प्रयोग होता हैं वह एकार्थ काव्य तथा जिसमें अनेक छंदोंका प्रयोग होता हैं वह अनेकार्थ काव्य हैं। प्रबंध काव्य का दूसरा भेद खंडकाव्य या खंडप्रबंध हैं। खंडकाव्य के दो भेद किये जा सकते हैं- एक संघात अथवा एकार्थ खंडकाव्य- जिसमें एकप्रकार के छंद में ही एक घटना या दृश्य का वर्णन किया जा सकता हैं और दूसरा अनेकार्थ खंडकाव्य जिसमें अनेक प्रकारके छंदों में विविध भावों के साथ जीवन के एक अंश का चित्रण होता हैं।

प्रस्तुत काव्यरुप के वर्गीकरण के लिए आचार्य मिश्रजी ने जो आधार स्वीकार किया वह निश्चय ही महत्वपूर्ण हैं। लेकिन काव्य के वर्गीकृत रुपके लिए उन्होंने जो नाम दिया हैं, उसकी सार्थकता तथा सतर्कता संदिग्ध हैं। एकार्थ काव्य तथा अनेकार्थ काव्य संज्ञा से वास्तविक अर्थबोध कम ही होता हैं। इसीप्रकार डॉ. शकुंतला दुबे डॉ. निर्मला जैन ने भी वर्गीकरण किया लेकिन सैध्दांतिक दृष्टिसे सफल प्रतीत नहीं होता। डॉ. गोपालदत्त सारस्वत ने अपने वर्गीकरण में चरितनायक, सानुबंध, कथा, रस एवं वस्तु वर्णन आदिका समावेश किया है। यह वर्गीकरण मात्र आधुनिक खंडकाव्य परंपरा का हैं। खंडकाव्य रुप का सैध्दांतिक वर्गीकरण नहीं लेकिन खंडकाव्य यह चारों तत्व पात्र , कथा, रस एवं वस्तुवर्णन काव्य के वर्गीकरण का आधार बन सकते हैं। अतः खंडकाव्य का वर्गीकरण इसप्रकार हो सकता हैं--

1) कथावस्तु के आधारपर - ऐतिहासिक - पौराणिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आदि।

2) छंद के आधारपर - एक छंदात्मक, बहुछंदात्मक, गीतात्मक मुक्त छंदात्मक आदि।

3) सर्ग के आधारपर- सर्गयुक्त, सर्गरहित आदि।

4) रस के आधारपर - एक रस समग्र रुप में, अनेक रस असमग्र रुपमें। जैसे श्रृंगार रसप्रधान, वीररसप्रधान, करुणरसप्रधान।

इसप्रकार खंडकाव्य सचमुच अपने आप में एक निराला काव्यरुप हैं। अपनी विलक्षण विशेषता के कारण यह काव्यरुप अन्य काव्यरुपों के बीच अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखता हैं। अखंड काव्यानंद देने में समर्थ यह खंडकाव्य विद्या विशेष लोकप्रिय तथा महत्व की हैं। अपने लघुरुप में होते हुए भी विभिन्नता एवं विविधता की बहुरंगी छटा दिखलानेवाली इस काव्यविधा का आश्यर्यजनक महत्व हैं। यह काव्यरुप अपने आप विविध तत्वों को ग्रहणकर विविध रुपों में निकला की इसके अनेक भेद भी हुए। ऐतिहासिक तथा विभिन्न काव्यतत्वों के आधारपर प्रस्तुत काव्य रुप के जितने भेद निकले वे वस्तुतः काव्यरुप के विकास के द्योतक है।

खंडकाव्य और अन्य समान काव्यरुप

खंडकाव्य एवं महाकाव्य--

महाकाव्य एवं खंडकाव्य प्रबंधकाव्य के दो भेद हैं। सामान्यतया जीवन के विस्तृत विश्लेषण महाकाव्य और जीवन के सीमित या आंशिक विश्लेषण से युक्त खंडकाव्य हैं।15 खंडकाव्य में आठ से कम सर्ग होते हैं तथा महाकाव्य में आठ से अधिक सर्ग होते हैं। महाकाव्य साधारणतया महानचरित्र, महान उद्देश्य, समग्र जीवन चित्रण, महान नायक एवं उदात्त शैलीसे परिपूर्ण होता हैं। खंडकाव्य के अपने विशेष लक्षण होते हैं। खंडकाव्य का नायक किसी भी वर्गका होता हैं। लेकिन इसमें उद्देश्य और प्रभाव की एकान्मुखता होती हैं। खंडकाव्य में जीवन का खंडचित्र होता हैं। कथावस्तु की लघुता एवं सीमित उद्देश्य के कारण वह जीवन का लघुचित्र प्रस्तुत करनेवाला पूर्ण काव्यरुप हैं। खंडकाव्य तथा महाकाव्य दोनों में ही कथावस्तु मुख्य रहती हैं लेकिन महाकाव्य में कथावस्तु का विस्तृत विवरण किया जाता हैं, तो खंडकाव्य में कथावस्तु संक्षेप में वर्णित की जाती हैं। महाकाव्य में अवान्तर कथाओं को स्थान दिया जाता हैं, तो खंडकाव्य में इसका स्थान नगण्य होता हैं। महाकाव्य का आरंभ मंगलाचरण वस्तुनिर्देश आदि से होता है, खंडकाव्य में इसका निर्वाह होना चाहिए ऐसा बंधन नहीं। महाकाव्य एव खंडकाव्य दोनों काव्योंका अंत धीरे-धीरे कथावर्णन के साथ होता हैं।

चरित्रचित्रण, वातावरण आदिका चित्रण महाकाव्य में विस्तृत तथा खंडकाव्य में सीमित दृष्टियोंसे होता हैं। प्रायः महाकाव्य वर्णनात्मक अधिक होता हैं, वहाँ खंडकाव्य अधिक अनुभूतिपूर्ण होता हैं। महाकाव्य में श्रृंगार, वीर, शांत इन तीन रसोंमेंसे कोई एक रस प्रधान होता हैं तथा महाकाव्य की रचना अनेक छंदोंमें की जाती हैं। खंडकाव्य के लिए इसीतरह का कोई बंधन नहीं। प्रायः खंडकाव्य एकरसात्मक तथा एकछंदात्मक होता हैं। महाकाव्य के समान धर्म, अर्थ, काम , मोक्ष में से किसी एक फल की सिध्दि भी खंडकाव्य के लिए जरुरी नहीं हैं। इसतरह महाकाव्य और खंडकाव्य दोनों में विषयगत तथा शैलीगत थोडासा अंतर हैं। प्रबंधकाव्य के दोनों भेद होने के कारण दोनों का समान महत्व दृष्टिगोचर होता हैं।

खंडकाव्य एवं एकार्थकाव्यः -

एकार्थकाव्य खंडकाव्य का ही एक भेद हैं। प्रबंधकाव्य के भेद महाकाव्य एवं खंडकाव्य के बीच आनेवाला यह काव्यरुप हैं। आचार्य विश्वनाथ ने इसकी परिकल्पना की हैं। उनकी परिभाषा में " भाषा या विभाषा में सर्गो से युक्त, संधियों की समग्रता से रहित एक ही अर्थ को लेकर रचित होनेवाला पद्य-काव्य एकार्थकाव्य हैं।"16 आचार्यजी के मतानुसार खंडकाव्य एकदेशानुसारि हैं तो एकार्थकाव्य "एकार्थ प्रवणे पद्य" हैं। खंडकाव्य में जीवन के एक अंश का चित्रण महाकाव्य की शैली में होता हैं तो एकार्थ काव्य में जीवन के किसी एक पक्ष को लेकर उसीका विस्तार किया जाता हैं। खंडकाव्य सर्गबद्ध होते हैं, एकार्थ काव्य के लिए सर्ग का कोई बंधन नहीं वह सर्गविहीन भी हो सकता हैं। खंडकाव्य में उद्देश्य तथा संदेश की संभावना कम रहती हैं,। एकार्थ काव्य में उद्देश्यगत एकार्थ प्रवणता होती हैं। खंडकाव्य में नायक का होना आवश्यक हैं, एकार्थ काव्य में नायक आवश्यक नहीं किसी घटना वृत्त में भी एकार्थात्मकता होती हैं। खंडकाव्य में कथा का विस्तार नहीं होता। एकार्थ काव्य में एक अर्थसिध्दि के हेतु नायक के जीवन के उतनेही अंशका चित्रण होता हैं, जितना किसी अर्थविशेष की सिध्दि के लिए आवश्यक हैं। खंडकाव्य में एक या दो संधियों को आवश्यक माना गया हैं परतु एकार्थ में ये संधिया हो ही ऐसा अनिवार्य नहीं है। पं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र के मतानुसार एकार्थ काव्य में तीन या चार संधिया होनी चाहिए। मिश्रजीने स्पष्ट किया हैं" महाकाव्यों की ही पध्दतिपर कुछ ऐसे प्रबंधकाव्य बनते रहें हैं, जिनमें पाँच संधियों का विधान नही होता। तात्पर्य यह है कि इनमे पूर्ण जीवन वृत्त ग्रहण तो किया जाता हैं, पर उसका उतना अधिक विस्तार नहीं होता, जितना

महाकाव्य में देखा जाता हैं। इसमें कथा का कोई उद्दिष्ट पक्ष प्रबल होता है।"।7 खंडकाव्य में एक या एकसे अधिक रसोंका परिपाक किया जाता हैं, एकार्थ काव्य एक रसप्रधान होता हैं, प्रसंगानुरुप अन्य रसोंकी भी संभावना होती हैं। इसतरह खंडकाव्य और एकार्थकाव्य में स्वरुप की दृष्टिसे थोडाबहुत अंतर है। प्रबंध की दृष्टि से एकार्थ काव्य एक सीमातक खंडकाव्य की अपेक्षा महाकाव्य के अधिक समीप हैं।

खंडकाव्य एवं कथाकाव्य--

संस्कृत काव्यशास्त्र में कथाकाव्य नाम से किसी अलग काव्यरुप का निर्धारण नहीं हुआ हैं। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार काव्य के तीन प्रकार पद्यबध्द, गद्यबध्द एवं मिश्र इसतरह होते हैं और गद्य व पद्य दोनों में कथाप्रबंध होते हैं"। पद्यात्मक प्रबंधको महाकाव्य व खंडकाव्य नामसे विभूषित किया गया हैं। और गद्यात्मक प्रबंधके कथा, आख्यायिका परिकथा आदि भेद किये गए हैं ।"।8 व्यापक दृष्टिसे गद्य व पद्य सभी प्रबंधों को कथाकाव्य या प्रबंधकाव्य कहा जाता है। रुप एवं भाव की दृष्टिसे यह खंडकाव्य से भिन्न रुप हैं? इसकी कथावस्तु कल्पना से अतिरंजित होती हैं, उसमें नाटकीय संधियों का निर्वाह नहीं होता। फलस्वरुप इसकी कथावस्तु विश्रृखंल होती हैं, लेकिन खंडकाव्य की कथावस्तु सुसंबंध्द होती है। जिसतरह खंडकाव्य का कोई महान उद्देश्य होता हैं, उसीतरह कथाकाव्य में कोई उद्देश्य नहीं रहता सिर्फ मनोरंजन मात्र इसका लक्ष्य रहता हैं, इस दृष्टिसे वह खंडकाव्य से मेल नहीं खाता। कथाकाव्य में अवांतर कथाओं की प्रचुरता होती हैं जो खंडकाव्यमे नहीं होती। इस दृष्टिसे देखा जाय तो कथाकाव्य और खंडकाव्य में स्पष्ट अंतर दिखाई देता हैं।

खंडकाव्य एवं मिश्रकाव्य -

कवि की अनुभूति की अभिव्यक्ति काव्यकी जननी हैं। इस अनुभूति की अभिव्यक्ति कभी महाकाव्य, कभी खंडकाव्य तो कभी गीतिकाव्य या मुक्तक काव्य का रुप ग्रहण करती हैं जिससे काव्य के विभिन्न रुप बन गए हैं। कुछ काव्यरुप ऐसे भी हैं जिसमें एकसे अधिक काव्यरुपों की विशेषता से परिपूर्ण होते हैं, ऐसे काव्य को मिश्रकाव्य नाम से अभिहित किया गया है। मिश्रकाव्य एक ऐसा काव्यरुप हैं जिन्हे हम प्रबध भी नहीं मान सकते और गीतिकाव्य की कोटि में भी नही रख सकते। इसमें किसी अन्य काव्यरुप का स्पष्ट मिश्रण होता हैं तथा जो गीतो के रुपमें प्रबंधात्मक लगते हैं और प्रबंध होकर भी मुक्तक से प्रतीत प्रतीत होते हैं ऐसे काव्य को मिश्रकाव्य की संज्ञा दी जाती हैं। कुछ काव्योंमें नाटक और गीतिकाव्य की

शैली मिलकर एक हो जाती हैं। लेकिन कुछ ऐसे काव्यरुप हैं जिनमें प्रबंध का अविष्कारण नाटकीय शैली में होता हैं। जब गीनिकाव्य में आख्यान का आग्रह प्रबल रहता हैं, तब आख्यान बंध सापेक्ष होता हैं और उसी समय यह काव्य गीतिकाव्य की सीमा को लांघकर प्रबंधकाव्य की कोटि में पहुँच जाता हैं। किसी नाटयप्रधान आख्यान काव्य में जीवनके एकही महत्वपूर्ण पक्षका चित्रण प्रबंधकाव्य के तत्वोंको मानते हुए किया जाता हैं तो उसे नाटयप्रधान खंडकाव्य कहा जाता हैं। प्रबंधात्मकता इसी स्वरुपके पुट का अंश मिश्रकाव्य में होने के कारण वह कुछ अंशोतक खंडकाव्य के नजदीक का स्वरुप माना जाता हैं।

खंडकाव्य एवं गीतिकाव्य

गीतिकाव्य का एक प्रकार हैं। जिसमें वैयक्तिक अर्थात नीजि अनुभूतियोंका प्रकाशन होता है। गीतिकाव्य में संगीतात्मकता या लय का प्रवाह होता हैं, इसमें भावात्मकता का चित्रण प्रधान रुपसे होने के कारण इसका संबध मस्तिष्क से न होकर हृदय से होता हैं और इसलिए उसका वस्तुतत्व हृदय के अनुरुप बहुत कोमल और भावनापूर्ण होता हैं और इसके लिए कोमल रसोंकी अभिव्यक्ति आवश्यक मानी हैं। गीतिकाव्योके प्रकरण संक्षिप्त होते हैं तथा इसमें सुंदरता , मनोहरता, प्रभावोत्पादकता आदि गुणोंको आवश्यक माना गया हैं। गीतिकाव्य का उद्देश्य कलात्मक शैली में आंतरिक जीवन की विभिन्न अवस्थाओं उसकी आशाओ उसकी आल्हाद की तरंगे और उसकी वेदना के चित्कारों का उद्घाटन करना ही हैं। इस दृष्टिसे देखा जाय तो खंडकाव्य और गीतिकाव्य में बहुत बडा फर्क दिखाई देता हैं।

इसप्रकार खंडकाव्य और अन्य समान काव्यरुपोंमें भाव तथा शिल्प की दृष्टिसे थोडा बहुत अंतर रहता है।

आधुनिक हिंदी खंडकाव्य

हिंदी साहित्य की अन्य महत्वपूर्ण काव्यविधाओं में खंडकाव्य का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं। इस विधाका विकास आधुनिक काल में ही हुआ हैं। इसके पहले खंडकाव्योंकी जो धारा प्रवाहित रही वह उतनी प्रबल न थी। आधुनिक कालकी बदलती परिस्थितीयोंमें जिस नवीन काव्यरुपोंका विकास हुआ उसमे खंडकाव्य एक हैं।

हिंदी के आधुनिक काव्य के उत्थान का प्रारंभ भारतेंदु हरिश्चद्र से शुरु

होता है। भारतेंदु तथा उनके समसामायिक कवियोंने कविता के भावक्षेत्र में क्रांतिद्वारा युगांतर उपस्थित किया। भारतेंदुजीने मध्ययुगीन पौराणिक वातावरण से साहित्य को बाहर निकाल कर उन्हें आधुनिक रुप देनेका महान कार्य किया। भारतेंदु काल में कविता मुख्यरुपसे ब्रजभाषा में लिखी जाती थी। साथही काव्य का विषय लोकहित, देशभक्ति, सामाजिक और धार्मिक पुनर्गठन, मातृभाषा का उध्दार, स्वतंत्रता आदि को प्रमुखता दी। भारतेंदु कालमें बहुत कम खंडकाव्य लिखे गए।

भारतेंदुजी के उपरांत हिंदी काव्य का दूसरा चरण शुरु होता हैं और इस काल की कविता के अग्रदूत रहें 'महावीरप्रसाद द्विवेदी।' द्विवेदीजीने काव्य के लिए खडीबोली को अपनाया। कविता की दृष्टि से यह एक युगांतरकारी घटना हैं, इस दृष्टिसे द्विवेदी सच्चे अर्थमें आधुनिक कविता के जन्मदाता माने जाते हैं। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के शब्दोंमें "नये विचार और नयी भाषा तथा शरीर और नयी पोशाक दोनों ही नयी हिंदी को द्विवेदीजी की देन हैं। इसकारण वें नयी हिंदी के प्रथम और युगप्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं।"19

बीसवी शती के प्रथम दो दशकों में महाकाव्य, खंडकाव्य, आख्यानकाव्य, गीतकाव्य आदि से खडीबोली का काव्यभंडार भर गया। इस काल में प्राचीन संस्कृतिका पुर्नजागरण हुआ साहित्य में नाना आदर्शो की सृष्टि हुई ओर उसमें एक स्वच्छंद भावना का विकास होने लगा। द्विवेदीजीके समकालीन कवि मैथिलीशरण गुप्त अयोध्यासिंह उपाध्याय, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय तथा सियारामशरण गुप्त ने प्राचीनपैराणिक तथा ऐतिहासिक पात्रोंकी सृष्टि बुध्दिवादी युगके आदर्शोंके अनुरुप की। द्विवेदी कालमें प्रतिकात्मक खंडकाव्योंकी रचना विपुल मात्रामें हुयी।

आधुनिक हिदी साहित्य का तृतीय चरण छायावाद नामसे जाना जाता है और इसके प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, निराला एवं महादेवी वर्मा को माना जाता हैं, जिन्होंने अपनी अनूठी प्रतिभा तथा भावजगत् के आधारपर छायावाद का भंडार भर दिया। यह काल परिवर्तन का काल हैं। इस काल में देश एवं साहित्य दोनों मे परिवर्तन हुआ। सदियों की गुलामी की जंजीर तोडकर देश आजाद हो गया जिससे साहित्य को पनपने का अच्छा अवसर मिला फलस्वरुप हिंदी काव्यधारा विकसित हुई इस काल की कविताका मुख्य विषय गोचर में अगोचर की खोज, दिव्य का अवतरण, मानवी भावनाओं के प्रति निसर्ग का योगदान आदि रहें। इस काल काल के काव्य में पौराणिक, प्रख्यान, आख्यानोंको मौलिक उद्भावनाओं के बलपर आधुनिक युगके नवीन परिवेश के अनुकूल नवीन रुप में प्रस्तुत करनेका प्रयास किया इस दृष्टिसे धर्मवीर

भारती की 'कनुप्रिया', 'अंधयुग', दिनकरजी 'उर्वशी' सुमित्रानंदन पंतका 'लोकायतन' आदि महत्त्वपूर्ण काव्यकृतियाँ हैं।

हिंदी के नयी कविता के युग में प्रबंध काव्योंकी रचना प्रचुर मात्रा में हुयी इससमय लिखे गए अधिकांश काव्यों के विषय तो पुराने ही रहें, लेकिन इससमय के कवियोंने पुराणे काव्यविषय की युक्तिसंगत मनोवैज्ञानिक व्याख्या करके काव्य सृजन किया इस दृष्टिसे रश्मिरथी, शल्यवध, द्रौपदी, चक्रव्यूह आदि प्रबंध काव्य इसके अनुपम उदाहरण हैं। इन काव्योंमें कवि ने कथावस्तु से अधिक पात्रोंके मनोवैज्ञानिक चरित्रचित्रण तथा उनके अंर्तद्वंद्वो व संघर्षो को स्थान दिया बहुतांश काव्योंमें पौराणिक पात्र केवल प्रतीक रुप में स्वीकार किये। और उनके द्वारा किसी समस्या को प्रस्तुत किया।

हिंदी के कई महत्वपूर्ण आधुनिक खंडकाव्य तथा उनके कवि-

साकेत, जयद्रथ वध, पंचवटी, नहुष आदि= मैथिलीशरण गुप्त।

मौर्यविजय, नकुल, सुनंदा= सियारामशरण गुप्त।

आँसू = जयशंकर प्रसाद।

कुरुक्षेत्र रश्मिरथि = रामधारीसिंह 'दिनकर'

कनुप्रिया = डॉ. धर्मवीर भारती

द्रौपदी, उत्तरजय = पं. नरेंद्र शर्मा

कौतेय कथा = उदयशंकर भट्ट

दानवीर कर्ण = गुरुपद्म सोमवाल

महाप्रस्थान = नरेश मेहता

चक्रव्यूह = विनोदचंद्र पांडेय

द्रोण = रामगोपाल रुद्र

प्रियप्रवास, पारिजात, वैदेही वनवास = अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

उर्मिला = बाळकृष्ण शर्मा 'नवीन'

जौहर = डॉ. रामकुमार वर्मा

सेनापति कर्ण = लक्ष्मीनारायण मिश्र

लोकायतन = सुमित्रानंदन पंत

महामानव = ठाकुरप्रसाद सिंह

कृष्णायन = द्वारिकाप्रसाद मिश्र

उपर्युक्त खंडकाव्य तथा उनके विषय को देखनेपर यह ज्ञात होता है कि आधुनिक काल में विभिन्न शैलियों के खंडकाव्यों का निर्माण हो रहा है ये सभी खंडकाव्य भाव एवं रुप की दृष्टिसे विशेष महत्व के हैं। इस दृष्टिसे आधुनिक हिंदी काव्य क्षेत्र में खंडकाव्य नामक काव्यविधाने अपना अनूठा स्थान प्राप्त किया हैं। इस दृष्टिसे पं. नरेंद्र शर्मा लिखित 'द्रौपदी' उत्तरजय' विशिष्ट काव्य परंपरा की परम उत्कृष्ट काव्यकृतियाँ है। द्रौपदी खंडकाव्य में कविने महाभारत की कथा का जितना अंश ग्रहण किया हैं उसमें कविने अपनी दृष्टि और योजनानुसार परिवर्तन किया हैं और इन परिवर्तनोंके उपरांत एक प्रतीकात्मक कथा की योजना करके उसे पाँच सर्गो में विभाजित कर प्रस्तुत किया हैं। उसीतरह अपने दूसरे खंडकाव्य 'उत्तरजय' की कथावस्तु में महाभारत युध्द के पश्चात युधिष्ठिर के राजधर्म पालन के प्रसंग को उठाया हैं। कविने अपनी मौलिक सूक्ष्म और नवीन उद्‌भावनाओं से इसे सर्वथा मौलिक रुप देकर बडा हृदयग्राही और मर्मस्पर्शी बना दिया हैं। अगले अध्याय में हम पं. नरेंद्र शर्मा जीका जीवन तथा काव्ययात्रा की चर्चा करेंगे।

---------*----------*----------*---------*----

संदर्भ सूचि

1) अग्निपुराण- अध्याय 237 कारिका 7

2) काव्यालंकार- सुत्रे 1/3/27

3) आचार्य विश्वनाथ- साहित्य दर्पण 6/314

4) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र:- वाङ:मय विमर्श सं. 2006 संवत्

5) डॉ. गुलाबराय- काव्य के रुप चतुर्थ संस्करण पृ. 11

6) डॉ. भगीरथ मिश्र- हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास पृ. 421 सं. 2005 सवंत्

7) आचार्य विश्वनाथ- साहित्य दर्पण परिच्छेद 6 पृ. 328-29

8) डॉ. भगीरथ मिश्र- हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास पृ. 421 सं. 2005 सवंत्

9) डॉ. गुलाबराय- 'काव्य के रुप' चतुर्थ संस्करण पृ.11

10) आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र- वाङ:मय विमर्श पृ. 46 सं. 2006 सवत्

11) बलदेव उपाध्याय- संस्कृत आलोचना द्वितीय खंड पृ. 62

12) संपादक नगेंद्रनाथ वसु- हिंदी विश्व कोश- पृ.709

13) डॉ. शकुंतला दुबे- काव्य रुपोंका मूल स्त्रोत और उनका विकास पृ. 143

14) डॉ. एस. तंकमणि अम्मा- आधुनिक हिंदी खंडकाव्य पृ.23 सं. 1987

15) डॉ. तकमणि अम्मा- आधुनिक हिंदी खंडकाव्य पृ.25 सं.1987.

16) आचार्य विश्वनाथ- साहित्यदर्पण पृ.6

17) प. विश्वनाथप्रसाद मिश्र- वाड मय विमर्श पृ.31

18) हेमचंद्र- काव्यानुशासन अध्याय 8

19) नंददुलारे वाजपेयी- आधुनिक साहित्य पृ. 17 सं.2022 सवंत्

KOLHAPUR